CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/1/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. संस्कृति और सभ्यता - ये दोनों दो शब्द हैं और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी बाहरी उन्नति करता है। संस्कृति मनुष्य का वह गुण है जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है, दया, ममता और परोपकार आदि सीखता है, गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनन्द लेने की योग्यता हासिल करता है। एक वह भी समय था जब आदमी को घर बनाना नहीं आता था, जब वह पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में वास करता था; जब खेती करना भी नहीं आता था और वह कन्द-मूल खाकर गुजारा करता था; जब उसे कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह या तो निर्वस्त्र रहता था या पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल पहनकर रहता था। इस हालत को मनुष्य की असभ्यता की हालत कहते हैं। लेकिन, इस हालत से निकलकर आदमी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, त्यों-त्यों वह सभ्य होता गया। यानी जब आदमी खेती करके अनाज उपजाने लगा, अनाज को आग से पकाकर खाने लगा, घर बनाकर रहने और कपड़े बुनकर उन्हें पहनने लगा, तब वह असभ्यता से निकलकर सभ्यता की ओर आने लगा। आज भी रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान हैं और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर, संस्कृति इन सबसे भिन्न है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है; मकान नहीं, मकान बनाने की रुचि है। भोजन की सामग्री हम सभ्यता के जरिये पैदा करते हैं, लेकिन जिस ढंग से हम भोजन तैयार करते हैं और जिस कला से हम उसे खाते हैं वह हमारी संस्कृति कहलाती है। [10 अंक]

1(i). संस्कृति सभ्यता से भिन्न है क्योंकि संस्कृति – [1 अंक]

(A) सभ्यता की अपेक्षा स्थूल और विशद होती है।

(B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

(C) समन्वयमूलक है और सभ्यता सूक्ष्म होती है।

(D) आदर्शमूलक है और सभ्यता यथार्थ होती है।

सही उत्तर: (B) सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में सभ्यता बाहरी उन्नति और संस्कृति भीतरी उन्नति का परिचायक है।
- दृश्य साधन तथा अदृश्य रुचि और कला के अंतर से सूक्ष्मता का अर्थ समझा जाता है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ पहचानें लेखक मोटर और मकान को सभ्यता से जोड़ता है, पर मोटर बनाने की कला और मकान बनाने की रुचि को संस्कृति कहता है। वस्तु दिखाई देती है; कला, रुचि और संवेदना मनुष्य के भीतर विकसित होती हैं। इससे संस्कृति की सूक्ष्म प्रकृति स्पष्ट होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) संस्कृति को स्थूल बताता है, जो भीतरी उन्नति के विपरीत है। (C) सभ्यता को सूक्ष्म कहकर गद्यांश का संबंध उलट देता है। (D) का आदर्श और यथार्थ का वर्गीकरण गद्यांश में नहीं दिया गया है; यहाँ आधार बाहरी साधन और भीतरी गुण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा अत्यंत सूक्ष्म होती है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मोटर और मकान जैसी वस्तुओं को उनकी कला और रुचि से अलग करके विकल्प चुनें।

1(ii). गद्यांश के अनुसार 'सभ्यता' का अभिप्राय क्या है ? [1 अंक]

(A) मानव को कलाकार बना देने की विशेषता

(B) मानव के स्वाधीन चिंतन की गाथा

(C) मनुष्य की ऐश्वर्यपूर्ण कहानी

(D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

सही उत्तर: (D) मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम

हल:

अवधारणा:

- शब्द का प्रसंगानुकूल अर्थ गद्यांश की परिभाषा से निकाला जाता है।
- सभ्यता के उदाहरण भोजन, वस्त्र, आवास और यातायात जैसी भौतिक उपलब्धियाँ हैं।

चरण 1: परिभाषा और उदाहरण जोड़ें गद्यांश में सभ्यता को वह गुण कहा गया है जिससे मनुष्य अपनी बाहरी उन्नति करता है। खेती, पका भोजन, बुने कपड़े, मकान, रेलगाड़ी और हवाई जहाज इसी विकास के उदाहरण हैं। ये सब जीवन की भौतिक दशाओं में सुधार दिखाते हैं।

चरण 2: शेष विकल्पों को परखें (A) का कलाकार बनना संस्कृति की कला संबंधी क्षमता से जुड़ा है। (B) का स्वाधीन चिंतन इस गद्यांश में सभ्यता की परिभाषा नहीं है। (C) केवल ऐश्वर्य की कहानी कहता है, जबकि सभ्यता में सामान्य आवास, अन्न और वस्त्र का विकास भी शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता का अभिप्राय मनुष्य के भौतिक विकास का क्रम है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: बाहरी उन्नति के उदाहरण गिनें और उन सबको समेटने वाला व्यापक अर्थ चुनें।

1(iii). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यान से पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार आदि गुण और कला का रसास्वादन करना सीखता है।

कारण : संस्कृति मनुष्य के मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास करती है। [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण गलत है।

(B) कथन गलत है, कारण सही है।

(C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(D) कथन और कारण दोनों गलत हैं।

सही उत्तर: (C) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है।
- दोनों सही होने पर यह भी देखना होता है कि कारण कथन को स्पष्ट करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश स्पष्ट कहता है कि संस्कृति से मनुष्य दया, ममता, परोपकार सीखता है और गीत, कविता, चित्र तथा मूर्ति से आनंद लेने की योग्यता प्राप्त करता है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता मानवीय मूल्यों का विकास दया और परोपकार जैसे गुणों में व्यक्त होता है। कला की समझ तथा निर्माण की कला मनुष्य के कौशल और रुचि से संबंधित हैं। इसलिए कारण भी गद्यांश के अनुरूप सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प मानवीय मूल्यों और कौशल का विकास होने से ही मनुष्य में करुणा तथा कलात्मक आस्वाद

की क्षमता आती है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A), (B) और (D) में किसी एक या दोनों को गलत बताया गया है, अतः वे अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले दया और कला को कथन में पहचानें, फिर उन्हें कारण के मूल्यों और कौशल से जोड़ें।

1(iv). 'सभ्यता' और 'संस्कृति' के अंतर को उचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता का संबंध जीवन की बाहरी भौतिक प्रगति से है।
- संस्कृति का संबंध भीतरी गुणों, रुचि, संवेदना और कला से है।

चरण 1: मूल अंतर समझें सभ्यता मनुष्य को भोजन, वस्त्र, मकान और यातायात के साधन देती है। इसके विपरीत संस्कृति उसके भीतर दया, ममता, परोपकार और कलाओं से आनंद लेने की योग्यता विकसित करती है। इस प्रकार दोनों की पहचान क्रमशः बाहरी उपलब्धियों और भीतरी परिष्कार से होती है।

चरण 2: गद्यांश का उदाहरण दें भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता है; उसे तैयार करने का ढंग और खाने की कला संस्कृति है। इसी प्रकार मकान एक भौतिक सुविधा है, जबकि उसे बनाने की रुचि संस्कृति का परिचय देती है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता बाहरी उन्नति है और संस्कृति भीतरी परिष्कार। भोजन की सामग्री सभ्यता का तथा उसे बनाने और खाने की कला संस्कृति का उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: अंतर बताते समय गद्यांश के एक ही उदाहरण के भौतिक और कलात्मक पक्ष साथ रखें।

1(v). 'सभ्यता और संस्कृति दोनों साथ-साथ चलते हैं' – कैसे ? उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता साधन उपलब्ध कराती है और संस्कृति उनके प्रयोग में रुचि तथा कला को व्यक्त करती है।
- गद्यांश के उदाहरणों से दोनों का जीवन में साथ-साथ उपस्थित होना स्पष्ट होता है।

चरण 1: दोनों की भूमिका स्पष्ट करें मनुष्य का विकास केवल सुविधाएँ जुटाने तक सीमित नहीं रहता। वह इन सुविधाओं के उपयोग की कला, रुचि और ढंग भी विकसित करता है। सभ्यता बाहरी जीवन को सुविधाजनक बनाती है तथा संस्कृति भीतरी गुणों को निखारती है। इसलिए दैनिक जीवन में दोनों परस्पर संबद्ध दिखाई देते हैं। साधन और उनके कलात्मक उपयोग को अलग पहचानने पर भी वे एक ही जीवन-व्यवहार में साथ मिलते हैं।

चरण 2: भोजन और आवास से पुष्टि करें भोजन की सामग्री पैदा करना सभ्यता का कार्य है, किंतु उसे तैयार करने और खाने की कला संस्कृति है। दोनों एक ही भोजन-व्यवहार में साथ उपस्थित हैं। इसी तरह मकान सभ्यता की उपलब्धि है और उसे बनाने की रुचि संस्कृति है। मकान की सुविधा के साथ निर्माण की रुचि भी अभिव्यक्त होती है। इन उदाहरणों से भौतिक प्रगति और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का साथ-साथ चलना समझ में आता है।

चरण 3: निष्कर्ष सभ्यता और संस्कृति साथ-साथ चलती हैं क्योंकि भौतिक साधनों के साथ उनके उपयोग की कला और रुचि भी विकसित होती है। अन्न पैदा करना सभ्यता है, जबकि भोजन बनाने और खाने की कला संस्कृति है।

त्वरित सुझाव: दोनों के संबंध की पुष्टि के लिए भोजन का उदाहरण लें और सामग्री तथा कला के पक्ष स्पष्ट करें।

1(vi). "संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।" इस कथन को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ आत्मा का आशय मनुष्य के भीतरी गुणों और संवेदनाओं से है।
- गद्यांश संस्कृति को दया, ममता, परोपकार और कलात्मक आनंद की क्षमता से जोड़ता है।

चरण 1: कथन का आशय खोलें शरीर की सुविधा के लिए अच्छा भोजन, कपड़े, मकान और यातायात के साधन उपयोगी हैं। गद्यांश इन्हें सभ्यता की पहचान मानता है। इनके होने से बाहरी उन्नति प्रकट होती है, पर संस्कृति की पहचान इन वस्तुओं के संग्रह से नहीं होती। संस्कृति का स्वरूप मनुष्य की रुचि, संवेदना और आचरण में प्रकट होता है। इसीलिए उसे शरीर के बजाय आत्मा का गुण कहा गया है।

चरण 2: गद्यांश के आधार दें संस्कृति मनुष्य को दया, ममता और परोपकार सिखाकर उसकी भीतरी उन्नति करती है। वह गीत-नाद, कविता, चित्र और मूर्ति से आनंद लेने योग्य बनाती है। ये संवेदनात्मक और कलात्मक क्षमताएँ हैं। मोटर या मकान भौतिक वस्तुएँ हैं, किंतु उन्हें बनाने की कला और रुचि मनुष्य की आंतरिक क्षमता का परिचय देती हैं। इस प्रकार गद्यांश का प्रत्येक उदाहरण भीतर के परिष्कार की ओर संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति मनुष्य की आंतरिक संवेदना, करुणा, परोपकार और सौंदर्यबोध का विकास करती है। ये आत्मिक गुण हैं; इसलिए संस्कृति को शरीर का नहीं, आत्मा का गुण कहा गया है।

त्वरित सुझाव: आत्मा शब्द को यहाँ भीतरी गुणों से जोड़ें और समर्थन में दया तथा कलात्मक आनंद के उदाहरण दें।

1(vii). सभ्यता के विकास से पूर्व मनुष्य की क्या स्थिति थी ? सभ्यता के विकास के क्या परिणाम हुए ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दो भाग हैं : सभ्यता से पूर्व की दशा और उसके विकास के परिणाम।
- उत्तर के लिए गद्यांश में दिए आवास, भोजन और वस्त्र के क्रमिक परिवर्तनों को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: सभ्यता से पूर्व की स्थिति मनुष्य घर बनाना नहीं जानता था, इसलिए पेड़ की छाया या पहाड़ की खोह में रहता था। खेती न आने से वह कंद-मूल खाकर जीवन चलाता था। कपड़ा बुनना भी नहीं जानता था, इसलिए निर्वस्त्र रहता या पेड़ों की छाल तथा पशुओं की खाल पहनता था। गद्यांश इसी अवस्था को मनुष्य की असभ्यता की स्थिति कहता है। उसके जीवन में स्थायी आवास, कृषि और बुने हुए वस्त्र जैसी सुविधाओं का अभाव था।

चरण 2: विकास के परिणाम सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य खेती करके अन्न उगाने लगा और आग पर पकाकर भोजन करने लगा। उसने घर बनाना तथा कपड़े बुनकर पहनना सीखा। आगे चलकर रेलगाड़ी, मोटर, हवाई जहाज, चौड़ी सड़कें, बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक जैसी सुविधाएँ विकसित हुईं। इस प्रकार उसके बाहरी जीवन में सुविधा और भौतिक प्रगति आई। ये उपलब्धियाँ गद्यांश में सभ्यता की पहचान बताई गई हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पहले मनुष्य खोहों में रहता, कंद-मूल खाता और छाल या खाल पहनता था। सभ्यता के विकास से उसे कृषि, पका भोजन, घर, बुने वस्त्र तथा उन्नत यातायात जैसी भौतिक सुविधाएँ मिलीं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को पहले और बाद की स्थिति में बाँटें; आवास, भोजन और वस्त्र का परिवर्तन अवश्य दिखाएँ।

2. धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन को भर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को। [8 अंक]

2(i). काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है ? [1 अंक]

(A) चाँदी की साड़ी के रूप में
(B) फूली सरसों के रूप में
(C) मैके में आई बेटी के रूप में
(D) हमजोली सखी के रूप में

सही उत्तर: (C) मैके में आई बेटी के रूप में

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु के रूप और भाव को दूसरी वस्तु से स्पष्ट किया जाता है।
- साड़ी धूप की चमक का बिंब है; बेटी की मगन अवस्था उसके आनंद का चित्रण करती है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पढ़ें कवि कहता है कि धूप चाँदी की साड़ी पहने चमक रही है और मैके में आई बेटी की तरह मगन है। बेटी से की गई सीधी तुलना धूप को प्रसन्न, आत्मीय और उल्लसित मानवीय रूप देती है। इसलिए प्रश्न में पूछे गए रूप का सबसे सटीक आधार दूसरी पंक्ति है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का भेद समझें (A) चाँदी की साड़ी धूप का परिधान है, उसका संपूर्ण मानवीय रूप नहीं। (B) फूली सरसों वह है जिससे धूप लिपटती है। (D) हमजोली सखियों की तुलना धूप और सरसों के मिलन से है। धूप का स्वतंत्र रूप पूछे जाने पर मैके में आई बेटी ही उपयुक्त उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष धूप को मैके में आई बेटी के रूप में चित्रित किया गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रूप पूछे जाने पर परिधान और उपमेय की पूरी मानवीय पहचान में अंतर कीजिए।

2(ii). फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई ? [1 अंक]

(A) धूप

(B) हवा

(C) बेटी

(D) चाँदनी

सही उत्तर: (A) धूप

हल:

अवधारणा:

- पंक्तियों के क्रम से क्रिया के कर्ता की पहचान की जाती है।
- अगली पंक्ति में कर्ता न लिखा हो तो पिछली पंक्ति का संदर्भ देखा जाता है।

चरण 1: लिपटने की क्रिया का कर्ता पहचानें आरंभ में धूप को चाँदी की साड़ी पहने और बेटी की तरह मगन बताया गया है। इसके तुरंत बाद वह फूली सरसों से आकर लिपट जाती है। यहाँ लिपटने की क्रिया का कर्ता वही धूप है जिसका वर्णन पहले से चल रहा है।

चरण 2: सभी विकल्पों का संदर्भ जाँचें (A) धूप का समर्थन पंक्तियों के क्रम से होता है। (B) हवा और (D) चाँदनी का इस प्रसंग में उल्लेख नहीं है। (C) बेटी धूप की उपमा है; कोई अलग वास्तविक बेटी सरसों से नहीं लिपटती। इसलिए उपमा को वास्तविक कर्ता मानना उचित नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष फूली हुई सरसों से धूप आकर लिपट गई है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: किसने जैसी सूचना के लिए पिछली पंक्ति का कर्ता खोजिए और उपमा को उससे अलग रखिए।

2(iii). खेतों की गोदी में सारंगी बजती है – [1 अंक]

(A) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की

(B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

(C) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की

(D) पक्षियों को बुलाने के लिए छोटे बच्चों की

सही उत्तर: (B) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की

हल:

अवधारणा:

- कवि प्राकृतिक ध्वनियों को संगीत के बिंब से सुंदर बनाता है।
- पास की पंक्तियाँ किसी प्रतीकात्मक ध्वनि का आशय स्पष्ट करती हैं।

चरण 1: सारंगी के बिंब का आधार खोजें खेतों की गोदी में सारंगी बजने की बात के तुरंत बाद पक्षियों के दल और उनके मीठे स्वरों का वर्णन है। इन दोनों पंक्तियों को साथ पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि पक्षियों के मधुर कलरव को सारंगी के संगीत जैसा अनुभव किया गया है।

चरण 2: विकल्पों को पाठ से मिलाएँ (B) में खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों का उल्लेख है, जो पंक्ति का सीधा आधार है। (A) हवा की ध्वनि यहाँ नहीं कही गई। (C) किसान की बाँसुरी और (D) बच्चों के बुलाने का कोई प्रसंग भी नहीं है। अतः इन कल्पित कारणों को उत्तर नहीं बनाया जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष खेतों की गोदी में उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की सारंगी बजती है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक संगीत का आशय निकालते समय अगली पंक्ति में बताए गए ध्वनि-स्रोत को देखिए।

2(iv). ठूँठ पर बैठे काल की तुलना किससे और किस आधार पर की गई है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में अमूर्त काल को दृश्य रूप देने के लिए उपमा प्रयुक्त हुई है।
- तुलना का आधार उन्हीं क्रियाओं और अवस्थाओं में खोजें जो पंक्ति में दी गई हैं।

चरण 1: तुलना की वस्तु बताएँ पंक्ति में काल को काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा दिखाया गया है। काग का अर्थ कौआ है। इस प्रकार अमूर्त काल की तुलना ठूँठ पर बैठे कौए से की गई है; पेड़ या ठूँठ स्वयं तुलना का दूसरा पक्ष नहीं है।

चरण 2: समान अवस्था स्पष्ट करें तुलना का आधार चुपचाप और निश्चेष्ट बैठकर दिन के अवसान को देखना है। सोई आँखों और गुमसुम बैठने के चित्र से उदासीन तथा शांत अवस्था उभरती है। उत्तर में केवल कौए का नाम न देकर उसकी यह मौन स्थिति भी बतानी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष काल की तुलना कौए से हुई है, क्योंकि वह ठूँठ पर कौए की तरह गुमसुम बैठा दिन का अंत देख रहा है।

त्वरित सुझाव: किससे और किस आधार पर वाले प्रश्न में उपमान तथा समान अवस्था दोनों अवश्य लिखिए।

2(v). नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिबिंब के आधार पर कवि निर्जीव दृश्य को जीवंत रूप दे सकता है।
- नंदी की उपमा में जल पीने की मुद्रा और आकाश की झुकी हुई प्रतीति मुख्य हैं।

चरण 1: काव्य-पंक्तियों का आशय समझें कवि निर्मल नभ को पृथ्वी के ऊपर बेसुध खड़ा देखता है और कहता है कि वह शिव के नंदी के समान नदी में पानी पी रहा है। नदी के जल में आकाश का प्रतिबिंब दिखाई देने से ऐसा दृश्य बनता है जैसे ऊपर फैला आकाश नीचे नदी तक झुक आया हो। यह दृश्य नदी और आकाश के बीच एक सजीव संबंध बना देता है।

चरण 2: कल्पना को स्पष्ट उत्तर में व्यक्त करें जिस प्रकार नंदी नदी में मुँह नीचे करके पानी पीता दिखाई दे सकता है, उसी प्रकार आकाश का जल में उतरा प्रतिबिंब उसे जल पीते हुए दिखाता है। आकाश का स्वच्छ, स्थिर और बेसुध रूप इस कल्पना को शांत तथा मनोहारी बनाता है। यहाँ वास्तव में आकाश के पानी पीने की घटना नहीं, प्रतिबिंब से उपजी कवि की सुंदर दृश्य-कल्पना व्यक्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने कल्पना की है कि नदी में झलकता निर्मल आकाश शिव के नंदी की तरह झुककर पानी पी रहा है। जल में पड़े प्रतिबिंब से आकाश की यह शांत और सजीव मुद्रा बनती है।

त्वरित सुझाव: प्रतिबिंब के प्रश्न में पहले वास्तविक दृश्य बताइए, फिर उससे बनी कवि की उपमा स्पष्ट कीजिए।

2(vi). काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-चित्रण में रंग, ध्वनि, गंध और दृश्य मिलकर वातावरण बनाते हैं।
- वर्णन काव्यांश में उपस्थित बिंबों पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: खेतों के रंग और संगीत का वर्णन करें ग्रामीण प्रकृति में चमकती धूप चाँदी की साड़ी पहने प्रसन्न बेटी जैसी लगती है। वह फूली सरसों से ऐसी लिपटी है मानो दो हमजोली सखियाँ गले मिल रही हों। खेतों के ऊपर दल बनाकर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वर सारंगी

के संगीत जैसे सुनाई देते हैं। इन बिंबों से खेतों का दृश्य उल्लास और आत्मीयता से भर उठता है।

चरण 2: सुगंध और शांत दृश्य जोड़ें रंग-बिरंगी पंखुरियों से निकलती सुगंध दिशाओं को महकाती है और प्रकृति का सौंदर्य मानव-मन में दिव्य दीप्ति भरता है। नदी में पड़ता निर्मल आकाश का प्रतिबिंब जल पीते नंदी जैसा प्रतीत होता है। अंत में ठूँठ पर गुमसुम बैठे कौए जैसे काल का बिंब दिन के अवसान की शांति दिखाता है। इस प्रकार खेत, फूल, पक्षी, नदी और आकाश मिलकर गाँव का मनोहारी वातावरण रचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष ग्रामीण प्रकृति चमकती धूप, फूली सरसों, पक्षियों के मधुर स्वर, रंगीन सुगंधित फूलों तथा नदी में झलकते निर्मल आकाश से सुंदर बनती है। यह दृश्य मन को आनंद और उजास से भर देता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति-वर्णन में काव्यांश से रंग, ध्वनि, गंध और शांत दृश्य के उदाहरण चुनकर जोड़िए।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

'अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।' – कैसे ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय वह है जिस पर लेखक ने पहले से उत्तर तैयार न किया हो। ऐसे विषय पर अपने अनुभव, अवलोकन और कल्पना के आधार पर मौलिक विचार विकसित करने होते हैं।
- लेखन पर पकड़ में विचारों की स्पष्टता, उपयुक्त शब्दों का चयन, क्रमबद्ध प्रस्तुति और सहज अभिव्यक्ति सम्मिलित हैं।

चरण 1: कथन का आशय समझें प्रश्न विषय की परिभाषा भर नहीं, लेखन-कौशल बढ़ने का कारण पूछता है। उत्तर में यह संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है कि अपरिचित विषय लेखक को स्वतंत्र रूप से सोचने और विचारों को भाषा में ढालने का अभ्यास देता है। केवल यह कहना कि अभ्यास से लेखन सुधरता है, पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: उत्तर की विषयवस्तु व्यवस्थित करें पहले स्वतंत्र चिंतन और मौलिकता, फिर अनुभवों तथा कल्पना का उपयोग, उसके बाद शब्द-चयन और विचार-क्रम की बात रखें। अंत में आत्मविश्वास तथा विभिन्न विषयों पर लिखने की क्षमता बढ़ने का परिणाम बताएँ। यह व्याख्यात्मक उत्तर है; इसमें पत्र या लेख की तरह पता, संबोधन अथवा शीर्षक की अनिवार्यता नहीं है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक तैयार सामग्री पर निर्भर नहीं रहता। वह अपने अनुभव, अवलोकन और कल्पना से नए विचार खोजता है। इससे स्वतंत्र चिंतन और मौलिकता विकसित होती है। विचारों को व्यवस्थित करने, उचित शब्द चुनने तथा सहज भाषा में अभिव्यक्त करने का अभ्यास मिलता है। सामान्य वस्तुओं और घटनाओं को नए दृष्टिकोण से देखने की क्षमता बढ़ती है। निरंतर अभ्यास से झिझक दूर होती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार विविध विषयों पर प्रभावी लेखन की पकड़ मजबूत होती है।

चरण 4: निष्कर्ष अप्रत्याशित विषयों पर लेखन स्वतंत्र चिंतन, मौलिकता, भाषा-चयन और विचारों के संगठन का अभ्यास कराता है; इन्हीं क्षमताओं से लेखन पर पकड़ मजबूत होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चिंतन, अनुभव, कल्पना, भाषा और आत्मविश्वास को लेखन-कौशल के विकास से जोड़ें; केवल गुणों की सूची न दें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों के नाट्य रूपांतरण में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्रों के स्वभाव और मनोभाव का वर्णन कर सकता है; नाटक में इन्हें मंच पर अभिनय, संवाद और क्रिया द्वारा व्यक्त करना पड़ता है।
- रूपांतरण में पात्र की मूल पहचान और कथा में उसकी भूमिका सुरक्षित रखते हुए उसकी मंचीय प्रस्तुति संभव बनाना आवश्यक है।

चरण 1: पात्रों से जुड़ी अपेक्षाएँ पहचानें प्रश्न पूरी कहानी के रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं, विशेष रूप से पात्रों के रूपांतरण की सावधानियाँ पूछता है। इसलिए चरित्र, संबंध, संवाद, वेशभूषा और अभिनय पर केंद्रित रहें। पात्र के स्वभाव को बदल देने से कहानी का मूल भाव भी बदल सकता है। उसकी आयु, सामाजिक स्थिति और परिवेश के अनुरूप भाषा चुननी चाहिए।

चरण 2: वर्णन को मंचीय क्रिया में बदलें कहानी में दिए गए चरित्र-वर्णन और मनोभाव को संवाद, हावभाव तथा गतिविधियों के माध्यम से सामने लाएँ। पात्रों के प्रवेश और प्रस्थान स्वाभाविक हों। अनावश्यक पात्रों को घटाते समय कथानक और मूल उद्देश्य प्रभावित नहीं होने चाहिए। उत्तर की रूपरेखा में पहले मूल चरित्र की रक्षा और फिर उसके अभिनय योग्य प्रस्तुतीकरण की बात रखें।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मूल स्वभाव, उद्देश्य और पारस्परिक संबंधों को सुरक्षित रखना चाहिए। उनके संवाद आयु, सामाजिक स्थिति और परिवेश के अनुकूल, संक्षिप्त तथा अभिनय योग्य हों। कहानी में वर्णित मनोभावों को संवाद, हावभाव और क्रियाओं द्वारा व्यक्त करना चाहिए। वेशभूषा, भाषा तथा प्रवेश-प्रस्थान चरित्र के अनुरूप हों। मंच की सीमाओं को देखते हुए अनावश्यक पात्र घटाए जा सकते हैं, किंतु इससे कथानक और मूल भाव न बदलें। प्रत्येक पात्र की भूमिका स्पष्ट और स्वाभाविक रहनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष पात्रों का मूल चरित्र बनाए रखते हुए उनके मनोभाव, संबंध और भूमिका को संवाद तथा अभिनय के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से मंच पर प्रस्तुत करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: पात्रों पर केंद्रित उत्तर के लिए स्वभाव, संबंध, संवाद, हावभाव और वेशभूषा याद रखें; कथानक की पूरी प्रक्रिया में न भटकें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चयन करते समय किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; उसमें कथा का बोध संवाद, आवाज़ और ध्वनि-संकेतों से होता है।
- कहानी में नाटकीय संघर्ष तथा ऐसी घटनाएँ होनी चाहिए जिन्हें सुनकर समझा जा सके।

चरण 1: कहानी की श्रव्य उपयुक्तता जाँचें कहानी चुनते समय देखें कि उसके घटनाक्रम और वातावरण को संवादों तथा ध्वनियों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है या नहीं। केवल दृश्य-सौंदर्य, मूक अभिनय अथवा पात्रों की अनकही मानसिक स्थिति पर निर्भर कहानी का रेडियो रूपांतरण कठिन होता है। आवश्यक जानकारी पात्रों की बातचीत में स्वाभाविक ढंग से आनी चाहिए। संवाद पात्रों के स्वभाव के अनुरूप और सहज होने चाहिए। कथा की अवधि भी प्रसारण के उपलब्ध समय के अनुकूल हो, ताकि उसका आरंभ, विकास और अंत स्पष्ट बना रहे।

चरण 2: कथानक और पात्रों का चयन करें कथा में स्पष्ट संघर्ष, उत्सुकता और प्रभावी परिणति हो। पात्र इतने अधिक न हों कि श्रोता आवाज़ों को पहचानने में उलझ जाए। स्थान और घटनाओं के अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए, क्योंकि दृश्य के बिना श्रोता को घटनाओं का क्रम समझना होता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो नाटक के लिए ऐसी कहानी चुननी चाहिए जिसमें नाटकीय संघर्ष, रोचक घटनाक्रम और प्रभावशाली संवादों की संभावना हो। घटनाएँ संवाद, संगीत और ध्वनि-प्रभावों से व्यक्त हो सकें; कहानी केवल दृश्यों या मूक अभिनय

पर निर्भर न हो। पात्र सीमित तथा उनकी आवाज़ें पहचानने योग्य हों। अत्यधिक स्थान-परिवर्तन और जटिल घटनाओं से बचना चाहिए। इन बातों का ध्यान इसलिए आवश्यक है क्योंकि रेडियो में श्रोता कुछ देख नहीं सकता; उसे सुनकर ही पात्रों, वातावरण और घटनाओं की कल्पना करनी पड़ती है।

चरण 4: निष्कर्ष उपयुक्त कहानी वही है जिसका नाटकीय प्रभाव और घटनाक्रम केवल सुनकर स्पष्ट हो सके।

त्वरित सुझाव: कहानी चुनते समय स्वयं से पूछें: क्या दृश्य हटाने पर भी संवाद और ध्वनियाँ पूरी घटना समझा देंगे?

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'रेडियो मूलतः एकरेखीय (लीनियर) माध्यम है।' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एकरेखीय माध्यम में संदेश समय के क्रम में आगे बढ़ता है।
- रेडियो सुनते समय श्रोता छूटी हुई बात पर मुद्रित पाठ की तरह वापस नहीं लौट सकता।

चरण 1: एकरेखीयता का आशय समझें रेडियो प्रसारण में शब्द जिस क्रम से बोले जाते हैं, श्रोता उन्हें उसी क्रम में सुनता और समझता है। संदेश का प्रवाह समय के साथ आगे बढ़ता रहता है। समाचारपत्र पढ़ते हुए पाठक पहले की पंक्ति दोबारा पढ़ सकता है, पर सीधे रेडियो प्रसारण में छूटा हुआ अंश अपनी इच्छा से फिर नहीं सुना जा सकता। इसीलिए लंबे तथा जटिल वाक्य सुनने वाले की समझ में बाधा डाल सकते हैं; हर वाक्य पहली बार में स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो पर शब्द और सूचनाएँ एक निश्चित क्रम में लगातार आगे बढ़ते हैं। श्रोता उन्हें उसी समय सुनता है और छूटी बात पर वापस नहीं लौट सकता। इसलिए रेडियो मूलतः एकरेखीय माध्यम है तथा उसकी भाषा सरल और तुरंत समझ आने वाली होनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो में सूचना का समयानुसार एक दिशा में प्रवाह ही उसकी एकरेखीयता है।

त्वरित सुझाव: एकरेखीयता बताते समय संदेश का क्रम और छूटी बात पर वापस न लौट सकना, दोनों बातें जोड़ें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
एंकर-बाइट से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एंकर-बाइट टेलीविज़न समाचार प्रस्तुति की एक शैली है।
- बाइट समाचार से संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन अथवा साक्षात्कार का अंश है।

चरण 1: प्रस्तुति के दोनों अंग पहचानें एंकर समाचार का परिचय और आवश्यक जानकारी देता है। इसके बाद घटना से संबंधित व्यक्ति, प्रत्यक्षदर्शी, विशेषज्ञ या अधिकारी की आवाज़ में उसका संक्षिप्त कथन सुनाया और दिखाया जाता है। इस रिकॉर्ड किए गए अंश को बाइट कहते हैं। यह एंकर के कथन के साथ समाचार को प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया अथवा सूचना का आधार देता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में आदर्श उत्तर एंकर-बाइट टेलीविज़न समाचार प्रस्तुति की वह शैली है जिसमें एंकर समाचार की जानकारी देता है और उसके साथ संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन या साक्षात्कार का अंश प्रसारित होता है। इस अंश को बाइट कहते हैं; इससे समाचार अधिक प्रामाणिक और प्रभावी बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर की समाचार-प्रस्तुति के साथ संबंधित व्यक्ति की बाइट का संयोजन एंकर-बाइट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: बाइट को एंकर की अपनी टिप्पणी न लिखें; वह समाचार से संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन होता है।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार-पत्रों में कारोबार और व्यापार जगत के लिए अलग पृष्ठ क्यों होता है ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषज्ञता पर आधारित पत्रकारिता में किसी क्षेत्र की खबरों को उनके संदर्भ और प्रभाव सहित प्रस्तुत किया जाता है।
- कारोबार, व्यापार और अर्थव्यवस्था की सूचनाएँ निवेशकों, उद्यमियों तथा सामान्य उपभोक्ताओं के निर्णयों को प्रभावित करती हैं।

चरण 1: पाठक की आवश्यकता पहचानना व्यापार जगत की गतिविधियों में रुचि रखने वाले पाठकों को बाजार, कंपनियों, बैंकिंग और आर्थिक नीतियों की नियमित जानकारी चाहिए। अलग पृष्ठ पर ये संबंधित सूचनाएँ एक स्थान पर उपलब्ध होती हैं।

चरण 2: अलग पृष्ठ का उद्देश्य स्पष्ट करना आर्थिक खबरों के तकनीकी पक्ष को समझने और उनका प्रभाव बताने के लिए विशेषज्ञ पत्रकारिता की आवश्यकता होती है। इसलिए इस पृष्ठ का उद्देश्य केवल व्यापार का प्रचार करना नहीं, पाठकों को उपयोगी आर्थिक जानकारी देना है।

चरण 3: निष्कर्ष कारोबार और व्यापार की खबरें विशेष रुचि तथा विशेषज्ञता का क्षेत्र हैं। निवेशकों, व्यापारियों और सामान्य पाठकों को बाजार, कंपनियों तथा आर्थिक नीतियों की जानकारी एक स्थान पर देने और उनके प्रभाव समझाने के लिए समाचार-पत्र अलग आर्थिक पृष्ठ रखते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विशेष पाठक-वर्ग और आर्थिक खबरों के लिए आवश्यक विशेषज्ञता, दोनों कारण जोड़ें।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

खोजी रिपोर्ट किसे कहते हैं ? इसका इस्तेमाल किसलिए किया जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता उन तथ्यों को प्रमाण सहित सामने लाती है जिन्हें जनहित के विरुद्ध छिपाया जा रहा हो।
- गहन छानबीन, दस्तावेजों की जाँच और स्रोतों से पुष्टि खोजी रिपोर्ट को सामान्य सूचना से अलग बनाते हैं।

चरण 1: खोजी रिपोर्ट की पहचान यह रिपोर्ट केवल किसी व्यक्ति के आरोप को दोहराती नहीं है। पत्रकार छिपे हुए तथ्यों की स्वतंत्र जाँच करता है और विभिन्न स्रोतों से उनका सत्यापन करके प्रमाण जुटाता है। इसी गहन पड़ताल से खोजी रिपोर्ट तैयार होती है।

चरण 2: इस्तेमाल का उद्देश्य बताना इसका उपयोग भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और सत्ता या पद के दुरुपयोग को उजागर करने के लिए होता है। उद्देश्य जनहित से जुड़े सत्य को जनता के सामने लाना और उत्तरदायी व्यक्तियों या संस्थाओं की जवाबदेही सुनिश्चित करना है।

चरण 3: निष्कर्ष गहन छानबीन और प्रमाणों के आधार पर छिपाए गए तथ्यों को उजागर करने वाली रिपोर्ट खोजी रिपोर्ट कहलाती है। इसका इस्तेमाल भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और पद के दुरुपयोग का पर्दाफाश करके जनहित की रक्षा तथा संबंधित व्यक्तियों की जवाबदेही तय करने के लिए होता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छिपे तथ्य और प्रमाण लिखें; उपयोग में जनहित तथा भ्रष्टाचार का खुलासा जोड़ें।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसे कहते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विश्लेषणात्मक रिपोर्ट किसी घटना या समस्या की सूचना देने के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव भी स्पष्ट करती है।
- तथ्यों, आँकड़ों और विशेषज्ञों के विचारों का विवेचन पाठक को घटना का व्यापक अर्थ समझने में सहायता करता है।

चरण 1: साधारण सूचना से आगे बढ़ना किसी घटना का केवल समय, स्थान और विवरण बता देना विश्लेषणात्मक रिपोर्ट के लिए पर्याप्त नहीं है। उसमें यह भी बताया जाता है कि घटना क्यों हुई और उसके पीछे कौन-सी परिस्थितियाँ या प्रवृत्तियाँ काम कर रही हैं।

चरण 2: विश्लेषण का आधार और परिणाम समझना पत्रकार उपलब्ध तथ्यों, प्रासंगिक आँकड़ों तथा विशेषज्ञों की राय के आधार पर घटना की पृष्ठभूमि और प्रभावों का विवेचन करता है। इससे पाठक उसके व्यापक संदर्भ और संभावित परिणाम समझता है; यह निराधार निजी राय प्रस्तुत करना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जिस रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के तथ्यों के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों की पड़ताल की जाती है, वह विश्लेषणात्मक रिपोर्ट कहलाती है। इसमें आँकड़ों और विशेषज्ञों के विचारों के आधार पर घटना का व्यापक अर्थ तथा संभावित परिणाम समझाए जाते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय तथ्य, कारण, पृष्ठभूमि और प्रभाव को एक क्रम में जोड़कर उत्तर पूरा करें।

5(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जंक फूड का बढ़ता चलन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का प्रभावशाली परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विकास और सार्थक समापन होना चाहिए।
- प्रस्तुत विषय में स्वाद और सुविधा के कारण बढ़ती लोकप्रियता को संतुलित भोजन की आवश्यकता से जोड़ना उचित है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले आकर्षक शीर्षक दें। आरंभ में बदलती भोजन संबंधी आदतों का दृश्य प्रस्तुत करें। फिर विज्ञापन, समय की कमी और स्वाद को बढ़ते चलन के कारणों के रूप में समझाएँ। अंत में घर के भोजन और विवेकपूर्ण चुनाव का संदेश दें। लेख में संबोधन या पत्र का प्रारूप आवश्यक नहीं है।

चरण 2: विषयवस्तु का विकास केवल जंक फूड के नाम गिनाने के स्थान पर उसके आकर्षण और प्रभाव का संबंध स्पष्ट करें। अधिक नमक, चीनी और वसा वाले भोजन का लगातार सेवन संतुलित आहार को पीछे धकेल सकता है। समाधान में निषेध का नारा देने के बजाय भोजन संबंधी अच्छी आदतों और परिवार की भूमिका पर बल दें। नीचे लगभग 120 शब्दों का स्वतंत्र मॉडल लेख दिया गया है।

चरण 3: संपूर्ण मॉडल लेख **जंक फूड का बढ़ता चलन**

स्कूल की छुट्टी होते ही ठेले पर उमड़ती भीड़ बताती है कि जंक फूड हमारे जीवन में कितना घुल चुका है। पिज़्ज़ा, बर्गर और चिप्स का स्वाद बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी लुभाता है। व्यस्त दिनचर्या, आकर्षक विज्ञापन और तुरंत उपलब्धता ने इसका चलन बढ़ाया है। लेकिन स्वाद की यह दौड़ सेहत को पीछे छोड़ रही है। अधिक नमक, चीनी और वसा वाला भोजन नियमित खाने से मोटापे जैसी समस्याओं का खतरा बढ़ता है। घर का संतुलित भोजन अब कई बच्चों को उबाऊ लगने लगा है। परिवार और विद्यालय मिलकर पौष्टिक भोजन को रोचक बनाएँ। फल, अंकुरित अनाज और घर के नाश्ते अच्छे विकल्प हैं। स्वाद का आनंद लें, पर उसे स्वास्थ्य का मालिक न बनने दें।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख जंक फूड के आकर्षण, उसके कारणों और संतुलित भोजन के महत्व को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक आरंभिक दृश्य, दो मुख्य विचार और एक प्रभावशाली अंतिम वाक्य रखें।

5(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

महानगरों का बढ़ता आकर्षण [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख किसी विषय के अनुभव और विचार को रोचक, संगठित तथा मौलिक भाषा में प्रस्तुत करता है।
- महानगरों के आकर्षण का विवेचन करते समय अवसरों के साथ वहाँ के जीवन की चुनौतियों का उल्लेख लेख को संतुलित बनाता है।

चरण 1: लेख का प्रारूप और रूपरेखा शीर्षक के बाद महानगर का कोई प्रभावी बिंब रखें। फिर रोजगार, शिक्षा और आधुनिक सुविधाओं से उत्पन्न आकर्षण समझाएँ। अगले भाग में भीड़, महँगाई और अकेलेपन जैसी चुनौतियाँ बताएँ। अंत में छोटे शहरों के विकास का सुझाव देकर विषय को व्यापक सामाजिक संदर्भ से जोड़ें।

चरण 2: विचारों का संतुलन महानगर को केवल सपनों की भूमि या केवल समस्याओं का केंद्र कहना एकांगी होगा। लेख में स्पष्ट करें कि बेहतर भविष्य की आकांक्षा लोगों को खींचती है, किंतु सुविधाओं के साथ जीवन की लागत भी बढ़ती है। भाषा सहज रहे और उदाहरण सामान्य जीवन से लिए जाएँ। नीचे दिया गया लगभग 120 शब्दों का लेख स्वतंत्र रूप से उत्तर के रूप में लिखा जा सकता है।

चरण 3: संपूर्ण मॉडल लेख **महानगरों का बढ़ता आकर्षण**

ऊँची इमारतें, चमकती सड़कें और अवसरों की पुकार लोगों को महानगरों की ओर खींचती हैं। गाँव और छोटे शहरों के युवा यहाँ बेहतर शिक्षा, रोजगार तथा आधुनिक जीवन के सपने लेकर आते हैं। बड़े अस्पताल, परिवहन सुविधाएँ और विविध संस्कृतियों से परिचय इस आकर्षण को और बढ़ाते हैं। किंतु चमक के पीछे कठिनाइयाँ भी हैं। महँगा आवास, भीड़, प्रदूषण और समय की कमी जीवन को थका देते हैं। पड़ोस में हजारों लोग होते हुए भी व्यक्ति अकेला पड़ सकता है। महानगर आगे बढ़ने के अवसर देते हैं, पर सफलता का कोई निश्चित वादा नहीं करते। आवश्यक है कि छोटे नगरों में भी शिक्षा और रोजगार विकसित हों, ताकि सपनों को उड़ान भरने के लिए अपना घर छोड़ना अनिवार्य न लगे।

चरण 4: निष्कर्ष लेख महानगरों के अवसरों और चुनौतियों का संतुलित चित्र प्रस्तुत करते हुए छोटे नगरों के विकास की आवश्यकता बताता है।

त्वरित सुझाव: महानगर विषय पर लिखते समय आकर्षण के कारण और जीवन की कठिनाइयाँ दोनों दें तथा अंत में व्यावहारिक सुझाव रखें।

5(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

बाज़ारों का बदलता स्वरूप [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का सजीव आरंभ, अनुभव आधारित विस्तार और विचारपूर्ण अंत होना चाहिए।
- बाज़ार के बदलते स्वरूप में स्थानीय दुकानों, विशाल खरीदारी केंद्रों और ऑनलाइन खरीदारी की तुलना उपयोगी है।

चरण 1: प्रारूप और विचार-योजना विषय के अनुरूप शीर्षक दें। आरंभ में पुराने बाज़ार का दृश्य प्रस्तुत करें; फिर आधुनिक मॉल और डिजिटल खरीदारी का परिवर्तन दिखाएँ। अंत में सुविधा के साथ स्थानीय व्यापार और विवेकपूर्ण खरीदारी का महत्व जोड़ें। रचनात्मक लेख के लिए पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: अभिव्यक्ति का चयन दुकानदार की परिचित मुसकान, गलियों की चहल-पहल और मोबाइल की स्क्रीन जैसे बिंब विषय को जीवंत बनाते हैं। वर्णन को केवल वस्तुओं की सूची न बनाएँ। अनुच्छेदों में विचारों का क्रम और आपसी संबंध स्पष्ट रखें। सुविधाओं और सीमाओं को जोड़ते हुए लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख लिखें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख बाज़ारों का बदलता स्वरूप

कभी बाज़ार का नाम सुनते ही सँकरी गलियाँ, दुकानदार की परिचित मुसकान और मोलभाव की आवाज़ें याद आती थीं। आज उनकी जगह चमचमाते मॉल और मोबाइल की छोटी स्क्रीन ने लेनी शुरू कर दी है। घर बैठे सामान चुनना, कीमतें मिलाना और डिजिटल भुगतान

करना हमारी दिनचर्या बन गया है। दूर बैठे कारीगर का उत्पाद भी अब हमारे दरवाज़े तक पहुँच सकता है।

इस बदलाव ने सुविधा और विकल्प बढ़ाए हैं, पर आत्मीय संबंधों की मिठास कुछ कम हुई है। आकर्षक छूट अनावश्यक खरीदारी भी करवाती है। छोटे दुकानदार बड़ी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। बाज़ार का आधुनिक होना स्वागतयोग्य है, लेकिन हमें स्थानीय दुकानों और कारीगरों को भी अपनाना चाहिए। समझदार ग्राहक वही है जो चमक के पीछे आवश्यकता और गुणवत्ता को पहचानता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख पुराने बाज़ार की आत्मीयता से डिजिटल बाज़ार की सुविधा तक के बदलाव को प्रस्तुत करता है और विवेकपूर्ण खरीदारी का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक आरंभिक दृश्य, बदलाव के दो प्रभाव और अपना निष्कर्ष रखें।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पतंग' कविता में 'बाल सुलभ क्रिया-कलापों व बाल-इच्छाओं का सुंदर चित्रण किया गया है।' – पुष्टि कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता में पतंग उड़ाना बालमन की उमंग, कल्पना और निर्भय सक्रियता का प्रतीक है।
- उत्तर की पुष्टि कविता में आए बालकों के खेल, जोखिम और ऊँचाई छूने की इच्छा से करनी है।

चरण 1: कविता के प्रमाण पहचानना बच्चे पतंग उड़ाने के लिए छतों पर दौड़ते हैं। उनका कोमल शरीर खेलते समय रोमांचित होता है और वे खतरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं। गिरने के बाद भी फिर छत पर आना खेल के प्रति उनके आकर्षण को प्रकट करता है। ये प्रसंग बालसुलभ चंचलता और साहस के उदाहरण हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कविता में बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों पर दौड़ते और खतरनाक किनारों तक पहुँचते हैं। गिरकर भी फिर खेलने लौटना उनकी निर्भयता दिखाता है। पतंग के साथ ऊँचाइयाँ छूने की आकांक्षा उनकी उमंग, कल्पनाशीलता और बालसुलभ इच्छाओं का सुंदर चित्रण करती है।

चरण 3: निष्कर्ष पतंग उड़ाने की चंचल क्रियाएँ और आकाश छूने की चाह बालमन के उत्साह, साहस और कल्पना को साकार करती हैं।

त्वरित सुझाव: पुष्टि में बच्चों की एक ठोस क्रिया और उससे प्रकट होने वाली एक बाल-इच्छा अवश्य जोड़ें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' जीवन निर्माण के नए राग और भैरव संगीत का सूचक है। – कैसे ? कविता के आधार पर उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल वर्षा से नवजीवन देने वाला और शोषण के विरुद्ध क्रांति का प्रतीक है।
- नए राग का संबंध निर्माण से और भैरव संगीत का संबंध क्रांति के प्रचंड स्वर से जोड़कर समझाना चाहिए।

चरण 1: निर्माण और प्रचंडता का संबंध बादल की वर्षा से छोटे पौधे और अंकुर नया जीवन पाते हैं। दूसरी ओर, उसकी गर्जना से संपन्न शोषक वर्ग भयभीत होता है, जबकि किसान उसका आह्वान करता है। इसलिए बादल का स्वर केवल प्रकृति का संगीत नहीं, अन्यायपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन की आशा भी है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बादल की वर्षा अंकुरों और पौधों को नया जीवन देती है; इसलिए वह निर्माण का नया राग है। उसकी प्रचंड गर्जना शोषकों को भयभीत करती और पीड़ित किसानों में आशा जगाती है। यही क्रांतिकारी स्वर भैरव संगीत बनकर अन्यायपूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन का संकेत देता है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल का राग नवजीवन का निर्माण और शोषणकारी व्यवस्था का परिवर्तन, दोनों भावों को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वर्षा से अंकुरों का विकास और गर्जना से शोषकों का भय, दोनों पक्ष जोड़ें।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'भाषा के चक्कर में बात का टेढ़ी फँसने' – से क्या आशय है ? 'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सहज कथ्य को अनावश्यक भाषिक सजावट में उलझाने के संकट को व्यक्त करती है।
- प्रभावी अभिव्यक्ति में भाषा भाव के अनुकूल होती है; कठिन शब्दों का प्रदर्शन अपने आप अर्थपूर्ण नहीं बनाता।

चरण 1: आशय की पहचान यहाँ बात का टेढ़ा फँसना उसके मूल आशय का अस्पष्ट हो जाना है। कवि के पास एक सीधी और सहज बात थी, किंतु उसे अधिक प्रभावशाली बनाने की कोशिश में वह भाषा के अनावश्यक प्रयोगों में उलझ गई। समस्या कथ्य में नहीं, उसे व्यक्त करने के ढंग में उत्पन्न होती है। कवि का अनुभव बताता है कि भाषा पर अत्यधिक ज़ोर देने से बात पाठक तक अपने मूल रूप में नहीं पहुँच पाती।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इसका आशय है कि सहज बात को चमत्कारपूर्ण भाषा में व्यक्त करने के प्रयास में उसका अर्थ उलझ गया। शब्दों की अनावश्यक सजावट ने कथ्य की स्वाभाविकता नष्ट कर दी। कविता सहज अनुभूति के लिए सरल, स्पष्ट और उपयुक्त भाषा का समर्थन करती है।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा का अनावश्यक आडंबर सीधी बात के अर्थ और सहजता को बाधित करता है।

त्वरित सुझाव: इस पद का अर्थ बताते समय सीधी बात, भाषिक सजावट और अर्थ के उलझने का संबंध स्पष्ट कीजिए।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"सब घर एक कर देना" – पंक्ति का बच्चों और कविता के संदर्भ में क्या औचित्य है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता कविता और बच्चों की असीम कल्पनाशीलता तथा सहज आत्मीयता को जोड़ती है।
- सब घर एक करने का अर्थ भेद मिटाकर सबको अपनाना है; यह भौतिक घरों को मिलाने का कथन नहीं है।

चरण 1: बच्चों के संदर्भ में अर्थ बच्चे खेलते समय अपने और पराए का कठोर भेद नहीं करते। उनका सहज मेलजोल बड़ों की बनाई सामाजिक सीमाओं से आगे जाता है। सब घर एक करने में इसी निष्कपट आत्मीयता का संकेत है। खेल की दुनिया में अलग-अलग घरों के बच्चे एक साझा आनंद और अपनत्व से जुड़ जाते हैं।

चरण 2: कविता से समानता कविता की उड़ान भी किसी एक घर, वर्ग या सीमित अनुभव तक नहीं रुकती। वह कल्पना और संवेदना के माध्यम से अलग-अलग लोगों को जोड़ती है। इसीलिए बच्चों के खेल का यह गुण कविता की व्यापक मानवीय पहुँच को समझाता है। दोनों में खुलापन है और दोनों मनुष्य की संकीर्ण सीमाओं को पार करते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बच्चे खेलते समय अपने-पराए का भेद भूलकर सभी घरों को अपना बना लेते हैं। उनकी दुनिया सहज आत्मीयता और निष्कपट मेलजोल की दुनिया है। कविता भी कल्पना और संवेदना के द्वारा घर, समाज और स्थान की सीमाएँ पार करती है। वह सबको जोड़ती है। इसलिए यह पंक्ति बच्चों और कविता की सीमाहीनता तथा व्यापक मानवीय अपनत्व को सार्थक रूप में व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष यह पंक्ति बच्चों के सहज अपनत्व और कविता की व्यापक संवेदना की समानता प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बच्चों का भेदरहित खेल समझाइए, फिर कविता की सीमाहीन मानवीय संवेदना से उसे जोड़िए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की ? तर्क सहित उत्तर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता संचार-माध्यमों द्वारा पीड़ा के प्रदर्शन और संवेदनहीन व्यवहार पर व्यंग्य करती है।
- किसी दुखी व्यक्ति को देखकर दुख होना और उसकी करुणा को दर्शकों के लिए तमाशा बनाना अलग व्यवहार हैं।

चरण 1: कविता का केंद्रीय व्यवहार कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति की परिस्थिति को समझने के बजाय उससे बार-बार दुख स्वीकार करवाना चाहता है। प्रश्न इस तरह पूछे जाते हैं कि वह रो पड़े और दर्शक भावुक हो जाएँ। कैमरा उसकी असहायता को सार्वजनिक प्रदर्शन की वस्तु बना देता है। यह व्यवहार उसके सम्मान और निजता की उपेक्षा करता है।

चरण 2: तर्क का आधार कविता का व्यंग्य उस व्यवस्था पर है जिसमें कार्यक्रम का प्रभाव और दर्शकों की प्रतिक्रिया मनुष्य से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। दिखाई देने वाली सहानुभूति के पीछे पीड़ा का दोहन है। पाठक के मन में करुणा उत्पन्न हो सकती है, किंतु चित्रित मीडिया-व्यवहार क्रूर है। उत्तर में इसी अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मेरे मत में यह करुणा के आवरण में छिपी क्रूरता की कविता है। कार्यक्रम संचालक अपाहिज की पीड़ा समझने के बजाय उसे रुलाकर दर्शकों को भावुक करना चाहता है। उसकी असहायता कैमरे के सामने तमाशा बन जाती है। व्यक्ति के सम्मान की उपेक्षा कर कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना संवेदनहीनता है। कविता इसी बनावटी सहानुभूति और अमानवीय मीडिया-दृष्टि पर तीखा व्यंग्य करती है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता करुणा का प्रदर्शन करने वाले माध्यम की क्रूरता और संवेदनहीनता का उद्घाटन करती है।

त्वरित सुझाव: अपना मत बताते हुए उसे संचालक के प्रश्नों और पीड़ा के प्रदर्शन से प्रमाणित कीजिए।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'तुलसीदास का युग बेरोज़गारी से त्रस्त था' – 'कवितावली' के संदर्भ में इस कथन को सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में तुलसीदास तत्कालीन समाज की आजीविका-संबंधी दुर्दशा और आर्थिक असहायता दिखाते हैं।
- बेरोजगारी का प्रमाण विभिन्न व्यवसायों के लोगों को काम और जीविका के साधन न मिलना है।

चरण 1: विभिन्न वर्गों की दशा तुलसीदास बताते हैं कि किसान की खेती, भिखारी की भीख, व्यापारी का व्यापार और चाकर की नौकरी संकट में हैं। इन अलग-अलग आजीविकाओं का उल्लेख बताता है कि कठिनाई किसी एक व्यक्ति या पेशे तक सीमित नहीं थी। उत्पादन, व्यापार और सेवा से जुड़े लोग समान रूप से जीविका के संकट से पीड़ित थे।

चरण 2: सामाजिक परिणाम जीविकाविहीन लोग चिंतित हैं और एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ तथा क्या करें। यह प्रश्न उनकी दिशाहीनता और रोज़गार के अवसरों के अभाव को व्यक्त करता है। पेट की आग मनुष्य को विवश करती है। कवि का चित्रण केवल गरीबी नहीं, काम और कमाई के साधन छिन जाने की व्यापक स्थिति सामने रखता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवितावली में किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और चाकर को नौकरी न

मिलने का चित्र है। विभिन्न वर्गों के लोग जीविका के साधनों से वंचित हैं। वे चिंतित होकर एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। यह असहायता तथा पेट भरने का संकट प्रमाणित करते हैं कि तुलसीदास का युग व्यापक बेरोज़गारी से त्रस्त था।

चरण 4: निष्कर्ष आजीविका के विविध साधनों का अभाव और लोगों की असहाय चिंता व्यापक बेरोज़गारी सिद्ध करती है।

त्वरित सुझाव: किसान, भिखारी, व्यापारी और चाकर की दशा को जीविका-संकट के चार प्रमाणों के रूप में जोड़िए।

---

8. भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो। [5 अंक]

8(i). काव्यांश में 'काली सिल' उपमान किसके लिए प्रयुक्त किया गया है ? [1 अंक]

(A) अंधकार से युक्त प्रकृति
(B) अँधेरे से युक्त आसमान
(C) अंधकार से युक्त पृथ्वी
(D) रात्रि का अंधकार

सही उत्तर: (B) अँधेरे से युक्त आसमान

हल:

अवधारणा:

- उपमान वह परिचित वस्तु है जिससे किसी वर्णित वस्तु की समानता दिखाई जाती है।
- काव्यांश में वर्णन का केंद्र भोर का नभ है; काली सिल और लाल केसर उसके रंगों को मूर्त करते हैं।

चरण 1: उपमान का संदर्भ समझें कवि ने भोर के आकाश में शेष अँधेरे की तुलना काली सिल से की है। उस पर उभरती हल्की लालिमा केसर जैसी दिखाई देती है। इसलिए सिल यहाँ अँधेरे से युक्त आसमान का उपमान है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में पूरी प्रकृति और (C) में पृथ्वी की बात है, जबकि पंक्तियों का विषय नभ है। (D) केवल रात्रि के अंधकार को बताता है; यहाँ भोर के आकाश की रंगमय स्थिति का चित्रण है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (B), अँधेरे से युक्त आसमान, है।

त्वरित सुझाव: काली सिल और लाल केसर को अलग वस्तुएँ न मानें; दोनों को आरंभिक शब्द 'भोर का नभ' से जोड़कर पढ़ें।

8(ii). 'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से' – पंक्ति का सही अर्थ है – [1 अंक]

(A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

(B) भोर का आकाश काला है।

(C) भोर में केसर को धोया गया है।

(D) भोर में काली सिल को धोया गया है।

सही उत्तर: (A) भोर का आकाश लालिमा से युक्त है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंब का अर्थ उसके संदर्भ में ग्रहण करना चाहिए, केवल उसके शाब्दिक अर्थ से नहीं।
- काली सिल अँधेरे आकाश और लाल केसर उषाकाल की हल्की लालिमा का संकेत है।

चरण 1: बिंब का भाव खोलें भोर में रात का अँधेरा अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, किंतु आकाश पर लालिमा फैलने लगी है। कवि को यह दृश्य ऐसा लगता है जैसे काली सिल थोड़े लाल केसर से धुल गई हो।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) आकाश की इसी लालिमा को व्यक्त करता है। (B) केवल कालेपन को बताकर लाल केसर के संकेत को छोड़ देता है। (C) और (D) केसर या सिल धोने की वास्तविक क्रिया मानते हैं, जबकि कवि ने तुलना की है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (A), भोर का आकाश लालिमा से युक्त है, है।

त्वरित सुझाव: उपमा में दिखाई गई घरेलू क्रिया को वास्तविक घटना न मानें; उससे व्यक्त आकाश के रंग को पहचानें।

8(iii). इस काव्यांश में कवि ने उषा का कौन-सा चित्र प्रस्तुत किया है ? [1 अंक]

(A) छायाचित्र

(B) रेखाचित्र

(C) शब्दचित्र

(D) भित्तिचित्र

सही उत्तर: (C) शब्दचित्र

हल:

अवधारणा:

- कविता में शब्दों के द्वारा किसी दृश्य को पाठक की कल्पना में साकार करना शब्दचित्र कहलाता है।
- चौका, सिल, केसर और झिलमिल देह जैसे बिंब उषाकाल के बदलते रंगों को सामने लाते हैं।

चरण 1: चित्रण के माध्यम को पहचानें कवि ने भाषा और उपमाओं से भोर के आकाश का दृश्य उपस्थित किया है। राख से लिपे चौके और लाल केसर वाली काली सिल के सहारे पाठक रंग, नमी और चमक की कल्पना करता है। यह शब्दों द्वारा बनाया गया चित्र है।

चरण 2: दूसरे चित्रों से भेद करें (A) छायाचित्र कैमरे से बनता है। (B) रेखाचित्र रेखाओं द्वारा और (D) भित्तिचित्र दीवार पर बनाया जाता है। यहाँ ऐसा कोई भौतिक चित्र नहीं है; काव्य की भाषा दृश्य का अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), शब्दचित्र, है।

त्वरित सुझाव: चित्र के विषय के साथ उसका माध्यम भी देखें: कविता की भाषा दृश्य रचती है तो उसे शब्दचित्र कहेंगे।

8(iv). कवि द्वारा भोर को 'राख से लीपा हुआ चौका' कहना प्रतिपादित करता है कि भोर का नभ : [1 अंक]

(A) अपनी आभा से चमत्कृत कर रहा है।

(B) प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ा रहा है।

(C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

(D) नए परिवर्तनों व आयामों का प्रतीक है।

सही उत्तर: (C) सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

हल:

अवधारणा:

- उपमा में वस्तुओं के रूप और रंग की समानता वर्णित दृश्य का आशय स्पष्ट करती है।
- राख से लिपे गीले चौके का बिंब भोर के नीले आकाश में मिली हल्की सफेदी और नमी का आभास देता है।

चरण 1: चौके और नभ की समानता समझें राख की सफेदी और गीले चौके का धुँधला, नम रूप भोर के नभ की रंग-छटा से मिलता है। आकाश में नीले रंग के साथ हल्की सफेद आभा मिल रही है। इस दृश्य-साम्य को विकल्प (C) स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य कथनों का मूल्यांकन करें (A) चमत्कृत करने वाली आभा और (B) सुंदरता बढ़ने का सामान्य प्रभाव बताते हैं; वे इस उपमा की विशेष रंग-समानता नहीं खोलते। (D) परिवर्तन का प्रतीकात्मक अर्थ देता है, जबकि यहाँ मुख्य संकेत सफेद और नीले रंगों के मेल का है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), सफेद व नीले वर्णों का अद्भुत मिश्रण है।

त्वरित सुझाव: राख से लिपे चौके की उपमा का प्रश्न आए तो पहले उसके रंग और गीलेपन को नभ के रंगों से मिलाएँ।

8(v). 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह' – का वर्णन किस अनुभूति से संबंधित है ? [1 अंक]

(A) निर्मलता और उज्ज्वलता

(B) कृत्रिमता और पवित्रता

(C) कोमलता और सुंदरता

(D) विस्मय और रहस्य

सही उत्तर: (C) कोमलता और सुंदरता

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बिंब रंग और प्रकाश के साथ संवेदना भी उत्पन्न करते हैं।
- नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब उषा के सौम्य, कोमल और सुंदर रूप को मूर्त करता है।

चरण 1: बिंब से उत्पन्न अनुभूति देखें नील जल की पृष्ठभूमि में गौर देह की झिलमिलाहट में रंगों का आकर्षक मेल और हल्की गति है। कवि इस सजीव तुलना से भोर के सौंदर्य की कोमल अनुभूति कराता है। इसलिए (C) सबसे उपयुक्त है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा पहचानें (A) निर्मलता और उज्ज्वलता कुछ दृश्य गुणों का संकेत देते हैं, पर पूरे बिंब की कोमल सौंदर्यानुभूति नहीं बताते। (B) की कृत्रिमता प्राकृतिक दृश्य के विपरीत है। (D) का विस्मय और रहस्य इस पंक्ति का प्रमुख भाव नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही विकल्प (C), कोमलता और सुंदरता, है।

त्वरित सुझाव: किस अनुभूति का प्रश्न हो तो केवल रंग न गिनें; पूरे बिंब से उत्पन्न भाव को विकल्पों से मिलाएँ।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"संबंधों की प्रगाढ़ता आत्मीयता के भावों से उत्पन्न होती है।" – कथन को 'भक्तिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के 'भक्तिन' पाठ में सेविका और लेखिका का संबंध स्नेह, समर्पण और विश्वास से गहरा होता है।
- संबंध की आत्मीयता समझाने के लिए पात्रों के व्यवहार और पाठ में व्यक्त संबंध की विशेषता का आधार लेना चाहिए।

चरण 1: उत्तर की दिशा निर्धारित करें प्रश्न का केंद्र यह है कि संबंधों की गहराई केवल सामाजिक पहचान या औपचारिक पद से नहीं आती। 'भक्तिन' में लेखिका और भक्तिन को जोड़ने वाला भाव आत्मीयता है। उत्तर में कथन को पाठ के इसी संबंध से समझाना चाहिए।

चरण 2: पाठगत आधार चुनें भक्तिन लेखिका के भोजन और दैनिक जीवन की देखभाल करती है। वह केवल आदेश मानने वाली सेविका नहीं रहती; अपने स्नेह के कारण लेखिका के जीवन में अधिकारपूर्वक हस्तक्षेप भी करती है। लेखिका उसकी सीमाओं और विशेषताओं को समझती हैं और उसके व्यक्तित्व का सम्मान करती हैं। परस्पर अपनापन उनके संबंध को सेवक-स्वामी की परंपरागत परिभाषा से आगे ले जाता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर 'भक्तिन' में लेखिका और भक्तिन का संबंध सेविका और स्वामिनी की सीमा से ऊपर उठ जाता है। भक्तिन लेखिका की देखभाल आत्मीय भाव से करती है और उन पर अपना अधिकार भी मानती है। लेखिका भी उसकी विशेषताओं और कमजोरियों सहित उसे अपनाती हैं। दोनों के बीच स्नेह, विश्वास तथा समर्पण है। यही आत्मीयता उनके संबंध को गहरा बनाती है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन और लेखिका का पारस्परिक अपनापन सिद्ध करता है कि आत्मीयता ही संबंधों की प्रगाढ़ता का आधार है।

त्वरित सुझाव: कथन की व्याख्या में केवल सामान्य नीति न लिखें; भक्तिन की देखभाल और लेखिका के अपनत्व को प्रमाण बनाएँ।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

क्या 'काले मेघा पानी दे' पाठ केवल एक अंधविश्वास की कहानी है, या इससे अधिक कुछ और भी है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में वर्षा के लिए किए जाने वाले लोकाचार के साथ लोकविश्वास और तर्कशीलता का द्वंद्व व्यक्त हुआ है।
- जीजी का व्यवहार त्याग, दान और सामूहिक हित की भावना को सामने लाता है; इसी से पाठ का व्यापक सामाजिक अर्थ खुलता है।

चरण 1: प्रसंग और तर्क पहचानिए इंदर सेना का पानी माँगना लेखक की तार्किक दृष्टि को अनुचित लगता है, क्योंकि सूखे में पानी की बर्बादी होती है। दूसरी ओर जीजी अपने हिस्से में कमी करके दूसरों को देने की बात समझाती हैं। यह प्रसंग परंपरा के समर्थन या विरोध तक सीमित नहीं है; उसमें सामूहिक संकट से निपटने की मानवीय भावना भी है। पाठ को केवल अंधविश्वास कहने से जीजी के चरित्र में दिखाई देने वाली उदारता और लोकजीवन की सामुदायिक चेतना छूट जाती है। साथ ही लेखक के तर्क को भूलकर अनुष्ठान को वैज्ञानिक तथ्य भी नहीं मानना चाहिए। दोनों दृष्टियों की मौजूदगी पाठ को विचारपूर्ण बनाती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर 'काले मेघा पानी दे' केवल अंधविश्वास की कहानी नहीं है। वर्षा के लिए इंदर सेना का अनुष्ठान लोकविश्वास दिखाता है, जबकि लेखक उसका तार्किक विरोध करता है। जीजी पानी देने को त्याग और दान से जोड़ती हैं। इस द्वंद्व से पाठ परंपरा, आस्था, वैज्ञानिक सोच और सामाजिक सहभागिता पर विचार कराता है। सूखे का संकट सामूहिक हित का महत्त्व उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष पाठ का केंद्रीय महत्त्व लोकविश्वास के चित्रण के साथ त्याग, लोककल्याण और तर्कशीलता के प्रश्न उठाने में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में इंदर सेना, लेखक की आपत्ति और जीजी के त्याग-दृष्टिकोण को जोड़कर व्यापक अर्थ स्पष्ट करें।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि किसी भी समाज को अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाज की अधिकतम उपयोगिता व्यक्ति की क्षमता और रुचि के अनुरूप काम मिलने से प्राप्त होती है।
- जन्म के आधार पर व्यवसाय तय करना व्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज की उत्पादकता, दोनों को बाधित करता है।

चरण 1: पाठ का केंद्रीय तर्क समझिए आंबेडकर श्रम-विभाजन और श्रमिकों के जन्माधारित विभाजन में अंतर करते हैं। जाति-प्रथा व्यक्ति की रुचि और दक्षता की उपेक्षा करके पेशा थोपती है। इससे काम में अरुचि पैदा होती है और बदलती परिस्थितियों में व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। समाज को प्रतिभाओं का उपयोग करना है तो उसे यह बाधा हटानी होगी। मनुष्य की क्षमता जन्म से निर्धारित किसी स्थिर खाने में नहीं बाँधी जा सकती। सामाजिक व्यवस्था को बदलती आर्थिक आवश्यकताओं के अनुसार काम बदलने की गुंजाइश भी देनी चाहिए। ऐसा न होने पर व्यक्ति की दक्षता अनुपयोगी रह जाती है और समाज भी उसकी सेवाओं से वंचित होता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर समाज को अपने सदस्यों की रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। शिक्षा और विकास के समान अवसर देकर उनकी क्षमताएँ विकसित करनी चाहिए। जन्म या जाति के आधार पर काम थोपने से अरुचि और अकुशलता बढ़ती है। मनोनुकूल काम मिलने पर व्यक्ति लगन से कार्य करता है; उसकी प्रतिभा का लाभ पूरे समाज को मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष समान अवसर और योग्यतानुसार स्वतंत्र व्यवसाय-चयन से ही व्यक्ति की क्षमता का अधिकतम सामाजिक उपयोग संभव है।

त्वरित सुझाव: व्यवस्था का उपाय लिखने के बाद उसका कारण अवश्य जोड़ें: मनोनुकूल काम से लगन, दक्षता और सामाजिक लाभ बढ़ते हैं।

---

10. अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज़ कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़, 'हरे राम ! हे भगवान !' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकारकर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी।

कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है। वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे। [5 अंक]

10(i). अँधेरी रात चुपचाप आँसू क्यों बहा रही थी ? [1 अंक]

(A) जंगली पशुओं की डरावनी आवाज के कारण

(B) प्रकृति की असमर्थता व विवशता के कारण

(C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

(D) रात में व्याप्त अंधकार और सन्नाटे के डर के कारण

सही उत्तर: (C) महामारी के कारण गाँव वालों की असहाय स्थिति से दुखी होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति को मानवीय अनुभूति दी जाती है; यहाँ रात का रोना गाँव के दुख को व्यक्त करता है।

- उत्तर का आधार कराहने, कै करने और निर्बल बच्चों के रोने का वर्णन है।

चरण 1: पीड़ा का आधार पहचानिए झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाजें आती हैं तथा बच्चे निर्बल स्वर में माँ को पुकारते हैं। इस असहाय स्थिति के प्रति संवेदना को रात के आँसू बहाने के रूप में व्यक्त किया गया है। इसलिए (C) का कारण पूरे प्रसंग से मेल खाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) पशुओं की आवाजें केवल भयावह वातावरण का अंग हैं। (B) प्रकृति की विवशता की सामान्य बात करता है, पर रात के दुख का सीधा कारण नहीं बताता। (D) अँधेरे और सन्नाटे के डर को कारण मानता है, जबकि यहाँ करुणा प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी से पीड़ित गाँव वालों की असहाय दशा से दुखी होने के कारण रात आँसू बहाती प्रतीत होती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के मानवीकरण का अर्थ निकालते समय पास में वर्णित मनुष्यों की दशा को उसका आधार बनाएँ।

10(ii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
क. प्रकाश का नाम नहीं	(i) हार न मानना
ख. तारे की ज्योति और शक्ति का शेष होना	(ii) आशा और जिजीविषा का अभाव
ग. चित न होना	(iii) पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना

विकल्प : [1 अंक]

(A) क-(iii), ख-(i), ग-(ii)

(B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

(C) क-(i), ख-(ii), ग-(iii)

(D) क-(i), ख-(iii), ग-(ii)

सही उत्तर: (B) क-(ii), ख-(iii), ग-(i)

हल:

अवधारणा:

- सुमेलन में दृश्य संकेत का प्रसंगानुकूल भावार्थ चुनना चाहिए।
- प्रकाश आशा का और चित होना पराजय का संकेत है; निषेध होने पर अर्थ बदलता है।

चरण 1: तीनों पदों का अर्थ मिलाइए प्रकाश का अभाव आशा और जिजीविषा के अभाव का संकेत है, अतः क-(ii)। तारे की ज्योति और शक्ति रास्ते में समाप्त होने से वह पीड़ितों की मदद नहीं कर पाता, अतः ख-(iii)। चित न होना पराजय स्वीकार न करना, अर्थात हार न मानना है, अतः ग-(i)।

चरण 2: विकल्प जाँचिए (B) में तीनों जोड़ सही हैं। (A) प्रकाश के अभाव को मदद न कर पाने से तथा तारे की शक्ति समाप्त होने को हार न मानने से गलत जोड़ता है। (C) और (D) दोनों क को हार न मानने से जोड़ते हैं, जो प्रकाशहीनता के आशय के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन क-(ii), ख-(iii), ग-(i) है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले सबसे स्पष्ट जोड़ ग-(i) तय करें; फिर प्रकाशहीनता और निष्प्रभ तारे के भावार्थ से शेष जोड़ जाँचें।

10(iii). रात्रि के भयावहपन का उल्लेख किस प्रभाव को दर्शाने के लिए किया गया है ? [1 अंक]

(A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

(B) निस्तब्धता में मानवीय पीड़ा की झलक दिखाने हेतु

(C) रात्रि में भी गाँव में हलकी चहल-पहल बताने हेतु

(D) रात में बच्चों के उत्साह व निडरता का प्रदर्शन करने हेतु

सही उत्तर: (A) महामारी की भयानकता और दुष्प्रभाव का उल्लेख करने हेतु

हल:

अवधारणा:

- वातावरण का वर्णन कथा की केंद्रीय परिस्थिति के प्रभाव को गहरा करता है।
- कराह, कै, बच्चों की निर्बल पुकार और सामूहिक रुदन महामारी की विनाशकारी स्थिति उभारते हैं।

चरण 1: समग्र प्रभाव पहचानिए रात्रि का अँधेरा, सन्नाटा और डरावनी आवाजें गाँव की असहाय दशा को अधिक भयानक बनाती हैं। रोगियों की कराह और निर्बल बच्चों की पुकार से महामारी का व्यापक दुष्प्रभाव सामने आता है। इस समग्र उद्देश्य को (A) सबसे स्पष्ट रूप में व्यक्त करता है।

चरण 2: शेष विकल्प परखिए (B) मानवीय पीड़ा की झलक बताता है, जो वर्णन का एक पक्ष है; किंतु पूरे भयावह वातावरण का व्यापक कारण महामारी है। (C) चहल-पहल का अर्थ निकालता है, जबकि सन्नाटा प्रधान है। (D) बच्चों को उत्साही और निडर बताता है, जबकि वे निर्बल स्वर में रोते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष रात्रि के भयावहपन से महामारी की भयानकता और उसके दुष्प्रभाव को उभारा गया है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: वर्णन के एक ब्योरे और उसके समग्र उद्देश्य में भेद करें; व्यापक प्रभाव बताने वाला विकल्प चुनें।

10(iv). गद्यांश में इनमें से किसका उल्लेख नहीं मिलता है ? [1 अंक]

(A) रात्रि की निस्तब्धता

(B) तारों की भावुकता

(C) उत्तेजना युक्त उत्साह

(D) आहों का हृदय में दबना

सही उत्तर: (C) उत्तेजना युक्त उत्साह

हल:

अवधारणा:

- नकारात्मक प्रश्न में वह कथन चुनना है जिसका पाठ में उल्लेख नहीं है।
- प्रत्यक्ष शब्दों और उनके स्पष्ट आशय से प्रत्येक विकल्प का मिलान किया जाता है।

चरण 1: उल्लिखित बातों को अलग कीजिए रात्रि की निस्तब्धता बार-बार आती है, इसलिए (A) उल्लिखित है। भावुक तारे के पृथ्वी पर आने की इच्छा और अन्य तारों की प्रतिक्रिया से (B) भी मिलता है। निस्तब्धता द्वारा आहों को हृदय में दबाने का कथन (D) को प्रत्यक्ष प्रमाणित करता है।

चरण 2: अनुपस्थित भाव पहचानिए पूरे अंश में करुणा, निर्बलता, भय और निराशा का वातावरण है। बच्चों का रोना उत्साह का संकेत नहीं है और कुत्तों का सामूहिक रुदन भी दुख का ही परिचायक है। कहीं उत्तेजना से युक्त उत्साह का उल्लेख नहीं मिलता; इसलिए (C) चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश में उत्तेजना युक्त उत्साह का उल्लेख नहीं मिलता। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: 'नहीं' शब्द को ध्यान में रखकर तीन उपस्थित बातों के प्रमाण खोजें; शेष विकल्प उत्तर होगा।

10(v). 'पेचक की डरावनी आवाज़' का प्रतीकार्थ है – [1 अंक]

(A) जीव-जंतुओं की सक्रियता

(B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

(C) पक्षियों की स्वाभाविक ध्वनि

(D) ग्रामीण परिवेश की सजीवता

सही उत्तर: (B) मृत्यु या अनिष्ट की आहट

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकार्थ में किसी ध्वनि का संदर्भ से निकलने वाला संकेत समझा जाता है।
- भय, बीमारी और करुण रुदन के बीच डरावनी पक्षी-ध्वनि अनिष्ट की आशंका बढ़ाती है।

चरण 1: प्रसंग में ध्वनि का प्रभाव समझिए पेचक की आवाज को विशेष रूप से डरावनी कहा गया है। उसके आसपास सियारों का क्रंदन, रोगियों की कराह और बच्चों की निर्बल पुकार आती है। इसलिए यह ध्वनि मृत्यु या अनिष्ट की आहट का प्रतीक बनती है और गाँव के भय को गहरा करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का अंतर समझिए (A) केवल जीवों की सक्रियता बताता है और प्रतीक का भाव खो देता है। (C) शाब्दिक ध्वनि बताता है, प्रतीकार्थ नहीं। (D) परिवेश की सजीवता पर बल देता है, जबकि यहाँ प्रसन्न जीवन का नहीं, भय और विनाश की आशंका का चित्र है। अतः (B) संगत है।

चरण 3: निष्कर्ष पेचक की डरावनी आवाज मृत्यु या अनिष्ट की आहट का प्रतीक है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर ध्वनि का शाब्दिक कारण नहीं, उससे जागने वाली भावना या आशंका चुनें।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर भगत जी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषताएँ व्यवहार के प्रमाण के साथ बतानी चाहिए।
- लगभग 40 शब्दों के उत्तर में मुख्य विचार और उसका पाठाधारित आधार संक्षेप में रखें।

चरण 1: भगत जी का संतोष और संयम भगत जी चूरन बेचकर प्रतिदिन केवल छह आने कमाते हैं। निर्धारित कमाई पूरी होते ही वे बचा चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। अधिक लाभ का अवसर मिलने पर भी उनका मन नहीं डोलता। इससे उनकी संतोषी और लोभरहित वृत्ति स्पष्ट होती है।

चरण 2: व्यवहार से गुण पहचानना उनके लिए व्यापार का उद्देश्य आवश्यक आजीविका है। वे बाज़ार के आकर्षण से मोहित नहीं होते और अपनी जरूरत पहचानते हैं। बच्चों को चूरन बाँटना उनकी उदारता तथा आत्मीयता दर्शाता है। उत्तर में इन गुणों को पाठ की घटना से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी संतोषी, संयमी, उदार और निर्लोभी हैं। वे प्रतिदिन छह आने की कमाई होते ही बचा चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान के कारण बाज़ार का आकर्षण उन्हें वश में नहीं कर पाता।

त्वरित सुझाव: छह आने की सीमित कमाई और बच्चों को चूरन बाँटने की घटना से संतोष तथा उदारता, दोनों स्पष्ट करें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर लिखिए कि पाठ में शिरीष के फूल की तुलना किससे और क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के माध्यम से व्यक्त अनासक्ति और जिजीविषा को समझना इस प्रश्न का आधार है।
- लगभग 40 शब्दों के उत्तर में मुख्य विचार और उसका पाठाधारित आधार संक्षेप में रखें।

चरण 1: तुलना का आधार समझना लेखक शिरीष को कालजयी अवधूत के समान देखते हैं। अवधूत बाहरी परिस्थितियों और मोह से ऊपर उठकर मस्त रहता है। उसी प्रकार शिरीष भीषण गरमी, लू और उमस में भी खिला रहता है। उसकी कोमलता विपरीत परिस्थितियों से नष्ट नहीं होती।

चरण 2: मानवीय संदेश स्पष्ट करना शिरीष की यह मस्ती निष्क्रियता नहीं, जीवन की अजेयता का संकेत है। इसी अविचलता के कारण लेखक को गांधीजी का स्मरण होता है, जो हिंसा और कोलाहल के बीच स्थिर रहे। तुलना समझाते समय कठिन परिस्थिति और आंतरिक सरसता का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की तुलना कालजयी अवधूत से की गई है। जैसे अवधूत बाहरी परिस्थितियों से अनासक्त रहता है, वैसे ही शिरीष भीषण गरमी और लू में भी सरस तथा खिला रहता है। उसकी अविचलता गांधीजी की भी याद दिलाती है।

त्वरित सुझाव: तुलना में केवल अवधूत का नाम न लिखें; लू और गरमी में भी खिले रहने से उसकी अनासक्ति का संबंध जोड़ें।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

" 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' में 'दासता' को किन व्यापक अर्थों में परिभाषित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक स्वतंत्रता में अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने का अधिकार भी सम्मिलित है।
- लगभग 40 शब्दों के उत्तर में मुख्य विचार और उसका पाठाधारित आधार संक्षेप में रखें।

चरण 1: कानूनी अर्थ से व्यापक अर्थ तक आंबेडकर दासता को केवल किसी व्यक्ति का कानूनी गुलाम होना नहीं मानते। समाज की ऐसी व्यवस्था भी दासता है जिसमें व्यक्ति को अपने जीवन और व्यवसाय के विषय में दूसरों द्वारा निर्धारित उद्देश्य स्वीकार करने पड़ें। इसमें निर्णय की स्वतंत्रता छिन जाती है।

चरण 2: व्यवसाय की स्वतंत्रता से संबंध यदि व्यक्ति अपनी इच्छा और योग्यता के अनुसार पेशा नहीं चुन सकता तथा उसे वंशानुगत काम करने के लिए बाध्य किया जाता है, तो वह औपचारिक रूप से स्वतंत्र होकर भी दासता झेलता है। इसीलिए परिभाषा में सामाजिक विवशता और दूसरों के उद्देश्य स्वीकारने की बाध्यता आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आंबेडकर के अनुसार दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। वह स्थिति भी दासता है जिसमें व्यक्ति दूसरों द्वारा निर्धारित उद्देश्य स्वीकारने को विवश हो। अपनी इच्छा और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता का अभाव भी इसी व्यापक दासता का रूप है।

त्वरित सुझाव: दासता की परिभाषा में दूसरों के निर्धारित उद्देश्य स्वीकारने की विवशता और पेशा चुनने की स्वतंत्रता का अभाव अवश्य लिखें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

किशनदा के चले जाने के बाद यशोधर बाबू ने ही उनकी कई परंपराओं को जीवित रखने की कोशिश की। – 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर लिखिए कि वे परंपराएँ कौन-सी थीं ? उनका यशोधर बाबू के पारिवारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न यशोधर बाबू की परंपरानिष्ठा तथा बदलते पारिवारिक मूल्यों के बीच तनाव की समझ जाँचता है।
- उत्तर के दो आवश्यक पक्ष हैं: किशनदा से मिली सांस्कृतिक परंपराओं के ठोस उदाहरण और पत्नी-बच्चों पर उनका प्रभाव।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा पहले होली, जन्यो पुन्यू और रामलीला से जुड़े आयोजन गिनाएँ। इसके बाद स्पष्ट करें कि यशोधर बाबू इन्हें सांस्कृतिक विरासत मानते थे, जबकि परिवार इनके खर्च और शोर से असंतुष्ट था। केवल परंपराओं की सूची देने से प्रश्न का दूसरा पक्ष अधूरा रह जाएगा।

चरण 2: परंपरा और पारिवारिक संबंध का अर्थ यशोधर बाबू का आग्रह किशनदा के प्रति निष्ठा और सामुदायिक जीवन से जुड़ाव दिखाता है। दूसरी ओर घरवालों की प्राथमिकताएँ बदल चुकी थीं। परिवार की असहमति को केवल आयोजनों के विरोध के रूप में नहीं, बल्कि दो पीढ़ियों की जीवन-दृष्टियों के अंतर के रूप में समझना चाहिए। प्रश्न में प्रभाव पूछा गया है, इसलिए उत्तर में कारण और परिणाम स्पष्ट रखना आवश्यक है। आयोजन यशोधर बाबू की दृष्टि में आत्मीयता के अवसर थे, पर परिवार उन्हें असुविधा मानता था। यही अलग मूल्यांकन तनाव को समझाता है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर किशनदा के जाने के बाद यशोधर बाबू ने उनकी सांस्कृतिक परंपराएँ बनाए रखीं। वे घर में होली गवाते, जन्यो पुन्यू पर कुमाऊँनी लोगों को जनेऊ बदलने के लिए बुलाते और रामलीला के अभ्यास के लिए अपने क्वार्टर का एक कमरा देते थे। उनके लिए ये आयोजन सामुदायिक आत्मीयता और किशनदा की विरासत के प्रतीक थे। किंतु पत्नी और बच्चों को इनका खर्च तथा शोर नापसंद था। समाज में भी इनके प्रति पहले जैसा उत्साह नहीं बचा था। इसलिए उनकी परंपरानिष्ठा से घर में नाराजगी और तनाव बढ़ा। पुरानी सांस्कृतिक संवेदनाओं और परिवार की आधुनिक रुचियों के बीच दूरी स्पष्ट हुई।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू ने सामुदायिक-सांस्कृतिक परंपराएँ सँभालीं, किंतु परिवार की बदली प्राथमिकताओं के कारण यही प्रयास पारिवारिक असंतोष का कारण बना।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में सोचें: तीन ठोस परंपराएँ, फिर खर्च-शोर से उपजा पारिवारिक तनाव।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' पाठ के आधार पर वसंत पाटील के व्यवहार की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कीजिए कि उन विशेषताओं का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न वसंत पाटील के छात्र-व्यवहार और लेखक के व्यक्तित्व-विकास के बीच संबंध की समझ जाँचता है।
- गुणों का उल्लेख करते समय उनके परिणाम भी बताएँ: अनुशासन से नियमित अध्ययन, मित्रता से आत्मविश्वास और सहायता से पढ़ाई में प्रगति।

चरण 1: चरित्र-विशेषताओं की पहचान वसंत का दुबला-पतला शरीर उसकी पहचान का बाहरी पक्ष है; उत्तर का केंद्र उसकी होशियारी, एकाग्रता, व्यवस्थित अध्ययन और सहयोगी स्वभाव होना चाहिए। वह तैयारी पूरी रखता था तथा दूसरों के सवाल जाँचने जैसी जिम्मेदारी सँभालता था। इन गुणों से वह लेखक के लिए अनुकरणीय सहपाठी बना।

चरण 2: लेखक पर प्रभाव की रूपरेखा लेखक ने वसंत की अध्ययन-पद्धति से प्रेरणा लेकर पढ़ाई को गंभीरता से लिया। मित्रता और सहयोग के कारण विद्यालय से उसका अपनापन बढ़ा। उत्तर में केवल यह न लिखें कि लेखक प्रभावित हुआ; बताएँ कि उसकी आदतों, पढ़ाई और आत्मविश्वास में क्या परिवर्तन आया। प्रभाव बताते हुए लेखक की सक्रिय भूमिका भी स्पष्ट करें। उसने वसंत की अच्छी आदतों

को देखकर स्वयं अभ्यास किया; इसलिए परिवर्तन केवल मित्र की सहायता से नहीं, उस सहायता को स्वीकार कर मेहनत करने से भी आया। यह सीखने की सकारात्मक प्रक्रिया है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर वसंत पाटील दुबला-पतला, पर होशियार, मेहनती और अनुशासित विद्यार्थी था। वह शांत रहकर पढ़ाई करता, तैयारी पूरी रखता और गणित के सवाल जल्दी हल करता था। वह कक्षा का मॉनीटर था तथा दूसरे विद्यार्थियों के सवाल जाँचता था। उसका व्यवहार सहयोगपूर्ण था। लेखक ने उसे आदर्श मानकर पढ़ाई में मन लगाया और अपने अभ्यास को व्यवस्थित किया। वसंत से मित्रता होने पर लेखक को कठिनाइयाँ समझने में सहायता मिली। धीरे-धीरे वह भी सवाल हल करने और दूसरों के उत्तर जाँचने लगा। वसंत की दोस्ती तथा शिक्षकों के अपनत्व से विद्यालय के प्रति उसका विश्वास और पढ़ाई के प्रति उत्साह बढ़ा।

चरण 4: निष्कर्ष वसंत की लगन, अनुशासन और सहयोग ने लेखक में अध्ययन की नियमितता, आत्मविश्वास तथा विद्यालय के प्रति अपनापन विकसित किया।

त्वरित सुझाव: हर गुण के साथ उसका प्रभाव जोड़ें: लगन से अभ्यास बढ़ा, सहयोग से कठिनाई घटी और मित्रता से आत्मविश्वास आया।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

"मुअनजो-दडो की सभ्यता 'लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली' सभ्यता थी।" – 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'लघुता में महत्ता' का अर्थ है कि साधारण आकार की वस्तुओं और दैनिक जीवन की व्यवस्थाओं में भी सभ्यता की ऊँची सांस्कृतिक दृष्टि दिखाई देती है।
- मुअनजो-दड़ो की विशेषता केवल विशाल निर्माण नहीं, बल्कि कलात्मकता, सुघड़ता और नागरिक जीवन की सुविचारित व्यवस्था है।

चरण 1: कथन का आशय समझें लेखक सभ्यता की महानता को केवल राजाओं के वैभव या स्मारकों की विशालता से नहीं आँकता। यहाँ छोटी मूर्तियों, मुहरों और बर्तनों में दिखाई देने वाला शिल्पकौशल महत्त्वपूर्ण है। दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बनावट और नागरिक सुविधाओं का विकास बताते हैं कि सामान्य जीवन में भी सौंदर्यबोध और व्यवस्थित सोच विद्यमान थी। इसलिए उत्तर में छोटे आकार और बड़े सांस्कृतिक अर्थ का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 2: उदाहरणों को मुख्य विचार से जोड़ें काँसे की नर्तकी जैसी छोटी मूर्ति की भावपूर्ण मुद्रा कला की परिपक्वता का उदाहरण है। मुहरों पर उकेरी गई आकृतियाँ और सुघड़ मिट्टी के बर्तन भी सूक्ष्म कलादृष्टि प्रकट करते हैं। घरों में स्नानागार तथा जलनिकास की व्यवस्था नागरिक सुविधा और स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है। ये उदाहरण अलग-अलग गिनाने के बजाय यह बताना आवश्यक है कि छोटी वस्तुओं और सामान्य व्यवस्थाओं में समृद्ध जीवनदृष्टि कैसे प्रकट होती है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में आदर्श उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में मुअनजो-दड़ो की महानता छोटे आकार की वस्तुओं और साधारण जीवन की सुघड़ व्यवस्था में दिखाई देती है। काँसे की नर्तकी की छोटी मूर्ति में भावपूर्ण मुद्रा और उत्कृष्ट शिल्प है। मुहरों की आकृतियाँ, मिट्टी के बर्तन तथा आभूषण तत्कालीन लोगों के विकसित सौंदर्यबोध का परिचय देते हैं। घरों के स्नानागार, नालियाँ और सुनियोजित गलियाँ स्वच्छता तथा नागरिक सुविधा के प्रति सजगता दिखाती हैं। यहाँ विशाल राजमहलों के प्रदर्शन के स्थान पर आम जीवन की कलात्मकता और सुव्यवस्था महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए लेखक इसे 'लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली' सभ्यता कहता है।

चरण 4: निष्कर्ष छोटी कलाकृतियों का उत्कृष्ट शिल्प और जनजीवन की सुव्यवस्थित सुविधाएँ मुअनजो-दड़ो की सांस्कृतिक महत्ता प्रकट करती हैं। यही कथन का केंद्रीय आशय है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नर्तकी, मुहरों और नागरिक सुविधाओं के उदाहरण देकर प्रत्येक को कलात्मकता या सुव्यवस्था से जोड़ें।